[श्री लाल कृष्ण अडवाणी]

कल मेरे मित्र श्री समर गुह बोले हैं—दोनों ने इस बात पर बल दिया कि हम कहीं अपनी आइडियलिस्टिक कल्पना और थ्योरैटिकल कल्पना में ऐसी गल्ती न कर बैठें कि जिस के कारण आकाशवाणी और और दूरदर्शन जैसे शक्तिशाली संचार साधनों पर किसी वेस्टेड-इन्टरेस्ट का प्रभाव हो जाय या इस की इस प्रकार की रचना बन जाय कि जिस के कारण देश का अहित हो। लेकिन मैं उन की भाषा सुनने के बाद और उन का भाषण सुनने के बाद भी इसी निष्कर्ष पर पहुंचा हूं कि जहां तक मूल मुद्दा है, उस मूल मुद्दे पर कोई बहुत ज्यादा मतभेद नहीं है, मतभेद उस के क्रियान्वयन के तरीके पर है ।

सभापति महोदय : अब आप अगले दिन अपना भाषण जारी रखेंगे ।

अब प्राइवेट मेम्बर्स बिजनेस शुरु होता है ।

श्री पवित्र मोहन प्रधान, आप अपना मोशन मूव करें ।

COMMITTEE ON PRIVATE MEMBERS' BILS AND RESOLUTIONS

TWENTY-FIFTH REPORT

SHRI PABITRA MOHAN FRADHAN (Deogarh): Sir, I beg to move:

"That this House do agree with the Twenty fifth Report of the Committee on Private Members' Bills and Resolutions presented to the House on the 29th November, 1978".

MR. CHAIRMAN: The question is:

"That this House do agree with the Twenty-fifth Report of the Committee on Private Members' Bills and Resolutions presented to the House on the 29th November, 1978"

The motion was adopted.

---

15 hrs.

RESOLUTION *RE.* RECLAMATION OF BARREN AND FALLOW LAND FOR DISTRIBUTION TO LANDLESS *PERSONS—Contd.*

MR. CHARMAN: Now, we take up further discussion of the following Resolution moved by Shri Laxmi Narain Nayak on the 4th August 1978:

"This House is of opinion that with a view to providing employment to about 7 crore unemployed persons, reclaiming barren and fallow land and increasing food production in the country, the Central Government should provide necessary financial assistance to State Governments and Union territories Administration to form a Land Army which may reclaim about 5 crore acres of barren and fallow land within one year and distribute it among the landless persons after providing irrigation facilities and other inputs."

श्री यमुना प्रसाद शास्त्री (रीवा) : माननीय सभापति महोदया, मैं कह रहा था कि अगर भूमिहीनों को उनकी जीविका का साधन, उनको खेती करने के लिए जमीन नहीं दी गयी तो इस का परिणाम बड़ा भयावह हो सकता है। उस दिन मैंने बोलते हुए इस बात का जिक्र किया था कि आचार्य विनोबा भावे ने इस सम्बन्ध में एक प्रयास किया था कि इस देश के भूमि-हीनों को जमीन मिल जाए लेकिन उनका प्रयास सफल नहीं रहा । आज भी हमारे देश में 4,74,9400 व्यक्ति हैं जो खेती का काम करते हैं और जिन के पास जमीन नहीं है । ये ऐसे लोग हैं जो खेती का काम करते हैं, अनाज पैदा करते हैं लेकिन उन के पास एक इंच भी जमीन नहीं है । यह स्थिति आज देश में है । यह स्थिति आज इस मोड़ पर आ गयी है कि अगर शीघ्रातिशीघ्र उन को जमीन नहीं मिलती है, उन को जीविका का साधन नहीं मिलता है तो इस का परिणाम इतना भयानक हो सकता कि उस की कल्पना नहीं की जा सकती ।

हमें दुनिया का इतिहास सिखाता है कि जहां दबे हुए लोगों को, अन्याय पीड़ित लोगों को उन को जीविका के साधन नहीं दिये जाते वहां वे निराश हो कर, हताश हो कर सशस्त्र क्रांति पर उतर आते हैं । इस के लिए कोई बहुत बड़ा प्रमाण ढूंढने की आवश्यकता नहीं है । हमारे देश में भी शुरु में, 1954 में ऐसा हुआ और चीन तथा रूस तो इस के प्रमाण हैं ही । बहुत दिनों तक इन को ऐसे ही दबाया नहीं रखा जा सकता है और आज देश का वातावरण भी ऐसा ही है कि इन को शीघ्रातिशीघ्र जमीन मिलनी चाहिए इन सब को जमीन देना कोई असंभव बात नहीं है लेकिन इस के लिए इच्छा शक्ति और संकल्प होना चाहिए । अगर ऐसा नहीं हुआ तो जैसा कि मैंने कहा कि ये लोग विवश हो जाएंगे, और मैं नहीं चाहता कि वह दिन आये, जिस दिन इस देश में न्याय पाने के लिए खून की नदियां बहें, क्रान्ति हो । वह दिन दुर्भाग्य का दिन होगा । उस में लोकतंत्र समाप्त हो जाएगा । एक भूखा आदमी हताश हो कर कुछ भी करने को तैयार हो जाता है ।

बुभुक्षितः किं न करोति पापम्

भूखा आदमी क्या नहीं करता । अभी हम थोड़ी देर पहले आकाशवाणी और आकाश भारती पर चर्चा कर रहे थे और कह रहे थे कि लोकतंत्र की नींव को मजबूत रखने के लिए संचार माध्यमों का पूर्णतः स्वतंत्र होना आवश्यक है, संचार माध्यमों पर किसी प्रकार का नियंत्रण नहीं होना चाहिए ताकि जनता की भावनाएं स्वतंत्र रूप से देश के सामने आ सकें । किन्तु माननीया मैं कहना चाहता हूं कि केवल संचार माध्यमों को स्वतंत्र रखने से ही लोकतंत्र जीवित नहीं रहेगा ।